ऐतिहासिक उपन्यास : बाणभट्ट की आत्मकथा

श्री श्याम नन्दन (सहायक आचार्य)

हिंदी विभाग, मानविकी एवं भाषा संकाय

महात्मा गाँधी केंद्रीय विश्वविद्यालय

मोतिहारी (बिहार) - 845401

Email: shyamnandan@mgcub.ac.in

स्नातकोत्तर हिंदी, द्वितीय सेमेस्टर

प्रश्नपत्र: हिन्दी उपन्यास (HIND4007)

अनुक्रम :-

- **इतिहास**
- **ऐतिहासिक उपन्यास**
- **बाणभट्ट की आत्मकथा**
  - **कथ्य :-**
    - गूढ़ एवं अदृम्न प्रेम के विविध रूपों की उदात्त अभिव्यंजना
    - स्त्री-शोषण के विविध आयाम
    - प्रत्यंत दस्युओं का आक्रमण और राष्ट्रीय संकट
    - इतिहास और कल्पना का अद्भुत समन्वय
  - **शिल्प :-**
    - कथानक संयोजन
    - भाषा एवं शैली
    - पात्र एवं चरित्र-चित्रण
    - संवाद-योजना, देशकाल एवं वातावरण
    - उद्देश्य
    - निष्कर्ष
- **सन्दर्भ-ग्रन्थ सूची**

इतिहास :-

- इतिहास शब्द का अर्थ है- 'ऐसा ही हुआ' अथवा 'ऐसा ही था'|
- इतिहास को हम सामान्य अर्थों में 'अतीत की घटनाओं का वृत्तान्त' कह सकते हैं |
- "इतिहास, इतिहासकार तथा उसके तथ्यों की क्रिया प्रतिक्रया की अनवरत प्रकिया है, अतीत और वर्तमान के बीच एक संवाद है|"
- वास्तव में इतिहास अतीत और वर्तमान के बीच एक सेतु की तरह होता है|
- इसी सेतु की सहायता से इतिहासकार अतीत की उन घटनाओं को हमारे सामने आधुनिक संदर्भो में प्रस्तुत करता है, जो हमारे वर्तमान के लिए उपयोगी हों|

ऐतिहासिक उपन्यास :-

- अतीत की किसी घटना अथवा किसी विशेष युग-जीवन संबंधी ऐतिहासिक तथ्यों को कल्पना के समुचित समन्वय के साथ वर्तमान युग-सन्दर्भों में अतीत का पुनरावलोकन करने वाला उपन्यास 'ऐतिहासिक उपन्यास' होता है|
- 'ऐतिहासिक उपन्यास गतयुगीन कल्पनापुष्ट तथ्यावली से उद्भूत मानव-चरित्र की गाथा है|'
- ऐतिहासिक उपन्यास, अतीत में घटित घटनाओं से प्राप्त ज्ञान और अनुभवों के आलोक में अपने वर्तमान के मूल्यांकन का औपन्यासिक प्रयत्न होता है|
- ऐतिहासिक उपन्यासकार युग विशेष की सभी घटनाओं को कोरी सच्चाई के साथ प्रस्तुत नहीं करता बल्कि वह 'इतिहास के उन्हीं अंशों को चुनता है जो काल की मार खाकर भी जीवित बच गए रहते हैं और जो व्यापक सत्यों से दीप्त होने के नाते वर्तमान जीवन सत्यो से जुड़ जाते हैं |'
- ऐतिहासिक उपन्यासकार अपने उपन्यासों में 'ऐतिहासिक परिवेश को उसकी सच्चाई में तो मूर्तमान करता ही है, साथ ही साथ उस परिवेश के भीतर से वह ऐसे प्रश्न, ऐसे मूल्य, ऐसे सौन्दर्य उभारता है जो अधिक व्यापक और गहन होने के नाते वर्तमान जीवन को भी अपनी परिधि में समेट लेते हैं |'
- ऐतिहासिक उपन्यासकार तथ्यों पर आधारित एवं सत्य से अनुशासित होता है|
- ऐतिहासिक उपन्यासों में लेखक ऐतिहासिक तथ्यों के साथ अपनी कल्पना के समायोजन से मनोवांछित संसार की रचना कर किसी सत्य का निष्पादन अथवा प्रस्तुतीकरण, वर्तमान युग-सन्दर्भों में करता है|

बाणभट्ट की आत्मकथा : -

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने कुल चार उपन्यासों की रचना की है- 'बाणभट्ट की आत्मकथा' (सन् 1946 ई.), 'चारु चन्द्रलेख' (सन् 1963 ई.), 'पुनर्नवा' (सन् 1973 ई.) तथा 'अनामदास का पोथा' (सन् 1976 ई.) |
- आचार्य द्विवेदी की उपन्यासकार के रूप में ख्याति का आधात-स्तम्भ है- 'बाणभट्ट की आत्मकथा'|
- 'बाणभट्ट की आत्मकथा' आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा सातवीं शताब्दी के प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट को केन्द्रीय पात्र बनाकर 'बाणभट्ट की आत्मकथा' के रूप में रचित उपन्यास है|
- इस उपन्यास में सातवीं शताब्दी के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन का चित्रण हुआ है।
- इस उपन्यास में द्विवेदी जी ने अदृष्ट प्रेम की गहन व्यंजना, प्रेम की संवेदना, उसकी उदात्तता के साथ ही तत्कालीन समाज के सामाजिक परिवेश के साथ ही ऐतिहासिक सत्य और तथ्य के साथ कल्पना के समुचित समन्वय द्वारा वर्तमान के सन्दर्भों में भी चित्रित किया है।
- वर्तमान संदर्भों को ऐतिहासिक सत्य के साथ इतनी कुशलतापूर्वक अनुस्यूत किया है कि कथा की जीवंतता व युगीन परिवेश की सजीवता को कोई क्षति नहीं पहुँचती है।
- सातवीं शताब्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर रचित इस उपन्यास में बीसवीं शताब्दी के सामाजिक संदर्भों का चित्रण कर हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने आधुनिक दृष्टि से अतीत के झरोखे से वर्तमान का देखने का सफल प्रयास किया है।

कथ्य :-

गूढ़ एवं अदृप्त प्रेम के विविध रूपों की उदात्त अभिव्यंजना :

- ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में हजारी प्रसाद द्विवेदी ने प्रेम के विविध रूपों का गहन किन्तु उदात्त रूप का चित्रण किया है।
- हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने स्वयं लिखा है “कादम्बरी में प्रेम की अभिव्यक्ति में एक प्रकार की दृष्ट भावना है परन्तु इस कथा में सर्वत्र प्रेम की व्यंजना गूढ़ और अदृष्ट भाव से प्रकट हुई है। ऐसा जान पड़ता है कि एक स्त्री-जनोचित लज्जा सर्वत्र उस अभिव्यक्ति में बाधा दे रही है।... कथा का जिस ढ़ंग से आरंभ हुआ है, उसकी स्वाभाविक परिणति गूढ़ और अदृष्ट प्रेम ही हो सकती है।.... फिर कादम्बरी में प्रेम के जिन शारीरिक विकारों का, अनुभावों का, हावों का अयत्नज अलंकारों का अधिक प्राचुर्य है उनके स्थान में कथा में मनोविकारों का, लज्जा का, अवहित्था का, जड़िमा का अधिक प्राचुर्य है।"
- ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में अदृष्ट प्रेम की ऐसी उदात्त व्यंजना हिंदी उपन्यास साहित्य में सर्वथा नई उद्भावना है।
- ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में प्रेम दैहिक न होकर उदात्त प्रेम है|
- उपन्यासकार व्यापक संदर्भों में मानव मात्र के प्रति प्रेम के रूप में इस ‘नरलोक’ से ‘किन्नर-लोक’ तक ’एक ही रागात्मक हृदय’ की व्याप्ति को सांसारिक धरातल पर उतारकर लोकमंगल का आकांक्षी है।
- ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में चित्रित प्रेम का वैशिष्ट्य यह है कि ‘रागात्मक हृदय’ होने के बाद भी उपन्यास का कोई भी पात्र उसको प्रकट नहीं करता, क्योंकि इसी अदृष्ट में उनके प्रेम की मर्यादा है।
- प्रेम की जैसी अभिव्यक्ति और जैसा उदात्त चित्रण ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में हुआ है, वैसी प्रेमाभिव्यक्ति और प्रेम-चित्रण हिंदी उपन्यास साहित्य में अद्वितीय है।

स्त्री-शोषण के विविध आयाम:-

- सातवीं शताब्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर द्विवेदी जी ने स्त्री-अपहरण की समस्या का विश्वसनीय चित्रण किया है।
- भट्टिनी, प्रतापी राजा देवपुत्र तुवुरमिलिन्द की पुत्री चंद्रदीधिति है|
- भट्टिनी को अपहृत, क्रीत चित्रित कर द्विवेदी जी ने यह बताने का प्रयास किया है कि बेटी चाहे तुवर मिलिंद जैसे प्रतापी राजा की हो या सामान्य व्यक्ति की, शोषण का ही शिकार होती है||
- महामाया भी अपहृता कन्या थीं, जिसका धूर्तों ने सम्राट ग्रह वर्मा से विवाह करवा दिया। अपहृत होने से पहले ही उनका वाग्दान हो चुका था।
- तात्कालीन समाज में नगर-वधू अथवा गणिका-परम्परा पुरूष-प्रधान समाज में नारी-शोषण का एक बड़ा उदाहरण है।
- द्विवेदी जी ने सुचरिता और निपुणिका के माध्यम से भारतीय समाज की बाल-विवाह प्रथा का भी चित्रण किया है|
- निपुणिका के माध्यम से द्विवेदी जी ने विधवा-समस्या का भी चित्रण किया है।
- स्त्री शोषण के विभिन्न आयामों का चित्रण करते हुए द्विवेदी जी दिखाते हैं कि 'स्त्री होना ही नारी के सब अनर्थों की जड़ है|'

प्रत्यंत दस्युओं का आक्रमण और सामयिक राष्ट्रीय संकट:-

- आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने इस उपन्यास में आर्यावर्त पर प्रत्यन्त दस्युओं के आक्रमण को ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर सामयिक सन्दर्भ में आसन्न राष्ट्रीय संकट के रूप में प्रस्तुत करने का प्रयत्न किया है।
- " 'बाणभट्ट की आत्मकथा' का रचनाकाल वह है जब भारत, अंग्रेजों के अधीन था और द्वितीय विश्व युद्ध से उपजे संकट के बादल सम्पूर्ण विश्व को आच्छादित किए हुए थे। तब उपन्यासकार की चेतना में भारत की परतन्त्रता, 'राष्ट्रीय संकट' के रूप में विद्यमान थी जिसकी अभिव्यक्ति 'बाणभट्ट आत्मकथा' में परोक्ष रूप में हर्षवर्द्धन काल के राष्ट्रीय संकट के रूप में हुई है।"
- उपन्यास में आर्यावर्त पर प्रत्यन्त दस्युओं के आक्रमण के आसन्न संकट से मुक्ति के लिए महामाया के जन-जागरण का अभियान के बहाने द्विवेदी जी ने देश की जनता को इसके निवारण हेतु एक होकर साम्राज्यवादी शक्तियों का सामना करने का संदेश दिया है।
- द्विवेदी जी ने यह बताने का प्रयास किया है कि भारत को अंग्रेजों की परतन्त्रता से मुक्ति दिलाने के लिए देश की जनता को जाति-धर्म-भाषा-प्रान्त-रंग आधारित स्तर-भेदों से ऊपर उठकर, पारस्परिक ईर्ष्या, द्वेष और वैमनस्यता त्यागकर राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए दुर्भेद्य चट्टान की तरह परस्पर एक होकर ही परतन्त्रता के संकट से मुक्ति प्राप्त हो सकती है, भारत स्वतन्त्र हो सकता है।

इतिहास और कल्पना का अद्भुत समन्वय :-

- 'बाणभट्ट की आत्मकथा' की कथावस्तु इतिहास प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट के जीवन से सम्बन्धित है।
- बाणभट्ट, राजा हर्षवर्द्धन के समकलीन और उनके दरबारी कवि, प्रकांड विद्वान और उच्च कोटि के प्रतिभाशाली साहित्य-सर्जक थे|
- द्विवेदी जी ने जनश्रुतियों के आधार पर ही प्रायः बाणभट्ट के जीवन प्रसंगों का चित्रण उपन्यास में किया है।
- स्वयं द्विवेदी जी ने लिखा है कि "बाणभट्ट के अतिरिक्त सम्राट हर्षवर्द्धन, सुगतभद्र, कुमार कृष्णवर्धन और ग्रहवर्मा ऐतिहासिक व्यक्ति हैं। इसके अतिरिक्त ऐतिहासिक दृष्टि से तुवुर मिलिंद एक समस्या है"
- इनके अतिरिक्त प्रायः सभी पात्र काल्पनिक हैं, जिनकी सृष्टि उपन्यासकार ने बाणभट्ट के चरित्र के विकास के लिए की है।
- काल्पनिक होने पर भी उपन्यासकार ने इनका समायोजित-प्रयोग इस तरह किया है कि ये पात्र काल्पनिक न लगकर प्रायः ऐतिहासिक ही प्रतीत होते हैं।
- द्विवेदी जी ने काल्पनिक पात्रों और काल्पनिक घटनाओं का ऐतिहासिक तथ्यों के साथ संयोजन इतनी कुशलतापूर्वक किया है कि उपन्यास में कथा की ऐतिहासिकता विश्वसनीय और सजीव हो उठी है।

शिल्प :

कथानक संयोजन :-

- ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ इतिहास प्रसिद्ध कवि बाणभट्ट के जीवन को केन्द्रित कर ऐतिहासिक तथ्यों के साथ कल्पना के अद्भुत समन्वय द्वारा लिखा गया एक वृहदाकार उपन्यास है|
- बाणभट्ट, निपुणिका और भट्टिनी की त्रिकोणात्मक प्रेम-कथा ही उपन्यास की मुख्य कथा है|
- उदात्त प्रेम के विविध रूपों, स्त्री-शोषण के विविध आयामों से संबंधित कथा-प्रसंगों तथा राष्ट्रीय संकट के साथ तात्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक पक्षों के चित्रण के कारण का कथानक विस्तृत है|
- उपर्युक्त कारणों से ही कथा-प्रसंगों में विविधता भी आ गई है|
- प्राय: सभी कथा-सूत्रों एवं प्रसंगों को मुख्य कथा के साथ कुशलतापूर्वक अनुस्यूत किया गया है|
- आत्मकथात्मक शैली में लिखित होने से कथा में विश्वसनीयता और सजीवता का समावेश हो गया है|

भाषा एवं शैली:-

- ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ की भाषा संस्कृत के तत्सम् प्रधान किन्तु क्लिष्ट शब्दों के प्रयोग से निर्मित हुई है |
- यह भाषा सामान्य पाठकों के लिए सहज बोधगम्य नहीं है किन्तु इतिहास प्रसिद्ध संस्कृत के प्रख्यात कवि बाणभट्ट की आत्मकथा और युगीन ऐतिहासिकता के यथार्थ को सम्पूरित करने के लिए ऐसी ही संस्कृतनिष्ठ भाषा उपन्यास की माँग थी, जिसे द्विवेदी जी ने औपन्यासिक धरातल पर मूर्तमान किया है।
- भाषा में प्रवाह के साथ ही अलंकरण की प्रवृत्ति भी हैं।
- जहाँ कहीं बाणभट्ट अपने विषय में कुछ बताता है, वहाँ भाषा तत्सम् शब्दों से निर्मित सहज, सरल और छोटे वाक्यों वाली है, जिनमें प्रचलित देशज शब्दों का भी प्रयोग किया गया है।
- जहाँ कहीं उपन्यासकार, प्रकृति, नारी सौन्दर्य आदि का वर्णन करता है, वहाँ भाषा अलंकारिक क्लिष्ट, संस्कृतनिष्ठ तत्सम् शब्दावली से निर्मित, लम्बे वाक्यों वाली कुछ बोझिल सी और कहीं काव्यात्मक सी हो गयी है।
- बाणभट्ट के ही अवलोकन बिंदु से उपन्यास प्रस्तुत किया गया है| वही उपन्यास में ‘कथक’ की भूमिका में है| ‘कथा बहुत कुछ आजकल की डायरी शैली में लिखी गई है|’

पात्र एवं चरित्र-चित्रण :-

- वृहदाकार कथावस्तु एवं कथा-प्रसंगों की विविधता के कारण पात्र-योजना में भी विविधता का समावेश हुआ है|
- उपन्यास में तीन सर्वप्रमुख पात्र हैं- बाणभट्ट, निपुणिका तथा भट्टिनी |
- 'बाणभट्ट की आत्मकथा' होने के कारण बाणभट्ट ही इसका नायक है क्योंकि कथा के आरम्भ से अंत तक वह उपन्यास में उपस्थित है तथा प्राय: सभी प्रमुख एवं गौण पत्रों के साथ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से सम्बंधित भी है|
- "मैं नारी देह को देव मंदिर के सामान पवित्र मानता हूँ" कथन बाणभट्ट की स्त्री-दृष्टि का द्योतक है| बाण की यही मान्यता निपुणिका के साथ मिलकर भट्टिनी के उद्धार में संलग्न होने तथा कथानक के विकास में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है |
- बाणभट्ट, उदात्त मानव मूल्यों का प्रतिष्ठापक, धैर्यवान, साहसी और भावुक प्रेमी के रूप में चित्रित हुआ है|
- अंतिम फलागम की दृष्टि से भट्टिनी प्रधान नायिका और निपुणिका उपनायिका है|

संवाद-योजना, देशकाल एवं वातावरण :-

- ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में संवाद-योजना युगीन वातावरण के अनुकूल है|
- विभिन्न वर्गों के पात्रों के कथोपकथन उनके अपने सामाजिक, शैक्षिक स्तर के बिल्कुल अनुकूल हैं |
- पात्रों के संवाद प्रसंगानुकूल, सहज, स्वाभाविक और प्रभावशाली हैं|
- हर्षवर्द्धनकालीन भारत की सामाजिक,धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक परिस्थितयों को सजीवता और विश्वसनीयता के साथ प्रस्तुत किया गया है|

उद्देश्य:-

- ‘नर लोक से किन्नर लोक तक एक ही रागात्मक हृदय व्याप्त है’ और इसी रागात्मक हृदय का संधान कर लोकमंगल हेतु उदात्त प्रेम की गूढ़ और अदृप्त व्यंजना इस उपन्यास का मुख्य उद्देश्य है|
- ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर वर्तमान सन्दर्भों को आधुनिक दृष्टि से देखना और प्रस्तुत करना भी उपन्यासकार का उद्देश्य है|

निष्कर्ष:-

- आत्मकथात्मक शैली में रचित ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ सातवीं शताब्दी की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि पर वर्तमान संदर्भों को साथ लेकर ‘गूढ़ प्रेम की अदृम्न व्यंजना का उदात्त आख्यान’ है|
- प्रेम की जैसी अभिव्यक्ति और जैसा उदात्त चित्रण ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में हुआ है, वैसी प्रेमाभिव्यक्ति और प्रेम-चित्रण हिंदी उपन्यास साहित्य में दूसरा नहीं है।
- “ ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ की भाषा उपन्यास की सर्जनात्मक भाषा का अद्भुत उदाहरण है। प्राय: संस्कृतनिष्ठ भाषा उपन्यास की यथार्थवादी भाषा के अनुरूप नहीं होती। पर ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ में संस्कृतनिष्ठ और बोलचाल की भाषा का दुर्लभ सर्जनात्मक समन्वय देखने कथ्य की आवश्यकता के अनुरूप कोमलकान्त पदावली युक्त समास-शैली और छोटे-छोटे सरल वाक्यों से युक्त प्रसाद शैली का प्रयोग बहुत प्रभावी हैको मिलता है। ।”
- ‘नर लोक से किन्नर लोक तक एक ही रागात्मक हृदय का संधान’ करने वाले ‘लोक मंगल के आकांक्षी प्रेम’ का उपन्यास ‘बाणभट्ट की आत्मकथा’ हिंदी साहित्य की उपलब्धि और अमूल्य निधि है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची :-

- बाणभट्ट की आत्मकथा, हजारी प्रसाद द्विवेदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2003
- हिन्दी उपन्यास : एक अंतर्यात्रा, रामदरश मिश्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण - 2012
- हिन्दी उपन्यास का इतिहास, गोपाल राय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण – 2016
- ऐतिहासिक उपन्यास और ऐतिहासिक रोमांस (प्रेमचंद पूर्व युग), डॉ. गुरुदीप सिंह खुल्लर, रिसर्च पब्लिकेशन इन सोशल साइंसेज, दिल्ली
- हिन्दी उपन्यास के प्रतिमान, शशिभूषण सिंहल, कला मंदिर, दिल्ली , संस्करण - 2002

धन्यवाद